लगित्रावेठमेयलविधालविधाल्य रेअक्वार्य अवत्रभक्षीन्त्री। ५१।। महन्तर्भावनी जिरीयादावजरेजता नेववान ग इमराव्यम्बर्वे वर्गर्वार्वार्वार्वार्वा टा रितवे परेपा । तररा कुमरे डा रीपीइसारिशसीधाउरेभीमार नुमायन्त्रवीषियागमेन ब्रब्धा हो विषया हे बें समें प्रवासी जी रसन्वनभगेरेश) पर।। वनभी भागवी वेअनेमत्यागमीगाउँरानम् रीन इरी। ग्राम्श्रमवर्गेर्ने स्ते। ने विष्टार्थ निम्बा सहें ब्वरम्भिम्बां सभाष्ट्रे सभाम लमास्रभाष्ट्रां उगमीते कुभ गृद्ध देव कु गृष्ट

र बाजतब्बरा विस्था है जिस्से विस्था है से बिरा स्यप्तवेते बीयाहे उपने उघपा में रिपीन प्र भगवायामाग्राजाने व्यवस्थित । भवविद्यामीवरामस् बनासम्त उठे। हथ उर्ग संग्रहार था गरा मण उ गागुरिसे स्वायस्त्री। रेगी रेगेन उद्देभग्याशीय मिर्ने अवस्था वर्वेगावयहवपाहर्गार्थर्गित्राभ

23

भेलत्मारववेगभइतेभवविउतेष्ठलाहो।वी तेम्निका ज्ञाना उपवासीयाइ हारीभसर्पश्रह ब्रमग्रन्थ ष स्ट्रावन बर्हा। उग्बर्द्र ने भेन्स उन्तमगु उपार्थना वाममवास गद्यारवेस्वमा भवव वभवलग् भागमाग्यभ्रम्य उ

विधिभार्रितरेथं न उलबेगा घरलभाष्ठितभेरे

28

वनमेरी।११॥ ॥ वसवसववढ भवषी उ

962

वैयां उत्तारियवनतम् उउठे । श्वन्य दिर वस्वेनभववी स्वाराहा नदृष्टित्वरामातीरी।मरभावरी भवउनि । बद्धमुखरम् व मुघर्गिव गार्भउग्रेषप्राचे उत्भावेग्रास तथेशववरी गें अगवर भिमवंगतर । विन्रब्रह्मस्भवधी उधारविषय गिरी भारती भारती निर्माण में जी अमवीरने । । । असे हिल्ला का वा ररागार् ने जारीपी ज भेगे विधयां। हुगरी। हिंथर मवरे उर्वे जी भारतिह मर्गिराविउत्रसारे गांभवाव र रि उग्राम्यमा उसम्बर्ध रिटी बी सबे छ रे जिए विस्तु रहे जिसे न मायब्रवयार्थार्थावयुभा उ अगवराईभेगार्थ उपेटि छवेशार्थ भगव तगलाताग्री।वरसवनगलावगतीगर्थ। १५ ॥ गवसवरारिमानभवधी उधभउरमव ग्रह्मचार्था रहे । ज्यान महिल्ला है अपने त अभस्रगावयावमी जिरी घीराभर भाउरिक्रिगाढें ग्राम्थानव गाम्बर्मेनभर उत्गाथनाव उ स्रमार्गारभगगरगासवस्य वन्वसरस्वतं भगवा उद्यम्भावस्व भाग मी गिरीमे भवाषी नाउँ॥ ग्राभउग्रेरन याउथम्बन्य गोनीयह्वाप्टेब नित्व बढ वारि त्यं वे री। अवाव क्रिमंचे २ जेग र्थ उर्ज मिन क्रां रिथ गद्यस्य असम्म भग्यी उथम

बम्मयागि। म्रीग्रभीदिन्। उरिस्री। मगीभवधी उथमभासगीभाव

निभवी व मायवारि उत्तर गरमी न ਭੁਲਾਮ ਜਕੀਲ ਅਰਬੀ ਤੁਮਾਹਿਜਾਜ वर्गपर ले इसे एया मुबबरे जभवद्यो उअभवार्वना यावमा उर्रेमिग्राचियाग्य मर्वेन घोरा प घा १० भि मवासे गा घरस घन वसवमं

38

विश्विनरी।१२॥ ॥घन्वस्वमारिभवर्षी उठामारेजान्य स्थानमा विरोवयद्रीराषीन जी। मर्उग्रेय उसे इसा भ्रम् ग्नेव्रहाउंगार्थ उत्मन्मारारि लघराष भगवागर समय हात्र पर भउर्रोध्रासेस्त्रेगळे वस्य बीव्रा म्बर्गाच्थ्र उपे उसी क्रिक्य वर्ग में दर्गा अ स्यागि विरोगसान्यो मर्थमवीर नेर्ने गान्वस्त्री ब्रग्नाथि हम्बेर्याते शारीपी इत्वात्व गर्थर्उनितितगर्थण्यत्वरीगर्

लेंगवेर हा इसिगा ३०॥ ग्रह्मवसवेगभ वर्णरात्रान्ववनुत्रवयारग्रथरत मारतज्ञाश्रवात्र शामानवासार्ष्ट्र गरेभार्गार्थार्थाउन्तमन से ग्राम्याध्स मवी वस्तु वस्तु वर्षे । ३१॥ भन्दी उधारवागुपानमी गिरीदी म्रस्थानवीगतीरत्वयगहे। यं उत्थ ਗਾਕਦਿਸ2 ਦੇਅਹਰਨਮਸਤਕੀਹਾ।ਬਦਲ रभिंडेलअबैतरीगद्या ग्राचन्रहरामिष् मेघनथानि।उरीधी ारिम्इविमयतार्व, गयानम्यात्रभाव्यामीत्उरो वेरीगमन्रथमवर्षस्य सेर्सेग्डाधीम

नवरेउत्राचिगेयस्रेउताम्बुद्यारित्यवरा ववरेग्रामिरेत्रेयराववरेग्रामवेस्र बीमायथ थारिनानेन्य मुग्रेथर्थर्थ वर्षे प्राप्त ।। विद्याग्रिकानिर्यमार्थि ਦੁਅਸਕੀਅਰਤਰੀ ਦੇ ਸ਼ਕਹਦੇ ਹਨ੍ਹਾਂ ਮਹਿੰਦ ਜੇ क्षमवर्रि जो ने गाने वर्ग घरवर भगे हैं ज रभर्तिवावारे भारा रिधावतार्यसा नवरा तिभगित्तलोगवपा) गद्यम् भवधी वेथभन्त एर राजेगा अमवरे डीकेग ने वर्ग रववन वेजावब उधिरववेग सेते शिया हे जा वसवा सा ਇਮਜੇਕਰਉਟੀਮਲੇਤਾਸਪੈਟਰੈਬਨਮਜੇਕਰ

तवडावागाधरस लिखभा जीमां में में गुर्सि हमें तुर्वे मवीसलं वही यिता त्रयावमी महे भर उनवी विरीनं हो गान्यभूषम बरे हैं बेरने गा

वे उन बढ़ कुम हुये हुने कि भारत के । १०॥ अयाग्रमी।।गिरीअग्रह्मकारी।ने इंढिवारी घ उ उ घ उ उ वर्गत्वामा कर्यम् उ वर्डभासी भेसी भा भा सहार है। मे ਕਹਾਫ਼ਿਲਤਿਸਦਾਨਪੀ ਸਕਰਮੇਸ਼ਲੇਪ थाही यह उता आहे। गिमवर्गमादिस्य

गिरी परहारू गिम्सर उठ रेस्ने स्वनेग ने बर राष्ट्र सार्ग हथ उपविद्यार गर्भाव । विश्विष्टा विश्व विश्व मभावथानमी गिरीषिठंग भावरीयर संस्वका ने बन्ध तालयीमबेलेयबका ना लिंखरी ने नहु उठेग ने भवी व माय से थ सर्वाद्या ।। इश्वरत ववी नववोग्रियन्यावना गिरीभी इहायवं यामग्रमाथेवास्यवन्तसंप्रवातामन Leavileed. रिरिश्वाधिपादिष् घावसभगसभवधी घमब एउब्पावमी।